चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

(हिन्दी पाठ्यक्रम : दिशा-निर्देश)

स्नातक पाठ्यक्रम इस प्रकार प्रभावी होगा

1.	बी.ए. प्रथम वर्ष	- सत्र	2008-2009 से प्रभावी
2.	बी.ए. द्वितीय वर्ष	- सत्र	2009-2010 से प्रभावी
3.	बी.ए. तृतीय वर्ष	- सत्र	2010-2011 से प्रभावी

सामान्य हिन्दी प्रथम एवं द्वितीय 2008-2009 एवं 2009-2010 हेतु

स्नातक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र-1

बी.ए. प्रथम वर्ष

पूर्णांक-50

हिन्दी भाषा-साहित्य का इतिहास एवं काव्यांग-विवेचन

इस प्रश्न पत्र के तीन उपभाग होंगे-

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप-विकास
(ख) हिन्दी साहित्य का इतिहास
(ग) काव्यांग परिचय

हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास-

हिन्दी की उत्पत्ति, हिन्दी की मूल आकर भाषाएँ तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास।
हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप – बोलचाल की भाषा, रचनात्मक भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, संचार भाषा
हिन्दी का शब्द भंडार–तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली।

हिन्दी साहित्य का इतिहास-

आदिकाल, पूर्वमध्यकाल, उत्तरमध्यकाल और आधुनिक काल की सामाजिक राजनैतिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग-प्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकर और उनकी प्रतिनिधि कृतियाँ, साहित्यिक विशेषताएँ।

काव्यांग-

काव्य का स्वरूप, प्रकार (महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक आदि) काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन।
रस के विभिन्न भेद, स्वरूप–स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव।
छन्द, दोहा, चौपाई, सवैया, हरिगीतिका, घनाक्षरी (कवित्त), मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, इन्द्रवज्रा।
अलंकार:- यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, प्रतीप, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा, विभावना, विशेषोक्ति।

अंक विभाजन

विवरणात्मक प्रश्न	30 अंक
अतिलघूत्तरी प्रश्न (200 शब्द)	10 अंक
लघूत्तरी प्रश्न (20 शब्द)	10 अंक

सहायक सन्दर्भ-ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास / गुणानंद जुयाल
2. हिन्दी भाषा / कैलाश चंद्र भाटिया
3. काव्यांग परिचय / योगेन्द्र प्रताप सिंह
4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य / बेचन
5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास / रामकुमार वर्मा
6. हिन्दी वाङ्मय : बीसवीं शती / नगेन्द्र (संपादक)

बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र-2 — **हिन्दी कथा साहित्य** — पूर्णांक-50

पाठ्य विषय :

उपन्यास :	चित्रलेखा	–	भगवतीचरण वर्मा	
कहानी संकलन :	कथा-सेतु	–	सम्पादक –	डॉ० उमाशंकर तिवारी श्रीमती माधुरी सिंह वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रस्तुत संकलन से-

आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद), कफन (प्रेमचंद), पत्नी (जैनेन्द्र कुमार), डिप्टी कलक्टरी (अमरकांत) रसप्रिया (फणीश्वरनाथ रेणु), चीफ की दावत (भीष्म साहनी), दिल्ली में एक मौत (कमलेश्वर) तथा सुख (काशीनाथ सिंह)

द्रुत पाठ हेतु तीन कथाकारों का अध्ययन अपेक्षित है-अज्ञेय, रांगेय राघव और शिवप्रसाद सिंह

इन तीन के विषय अतिलघूत्तरी प्रश्न ही पूछे जायेंगे। उपन्यास एवं निर्धारित हिन्दी कहानियों से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जायेंगे।

अंक विभाजन

व्याख्या एवं प्रश्न	30 अंक
लघूत्तरी प्रश्न (200 शब्द)	10 अंक
अतिलघूत्तरी प्रश्न (20 शब्द)	10 अंक

प्रश्न पत्र-1

बी.ए. द्वितीय वर्ष

आधुनिक हिन्दी काव्य

पूर्णांक-50

पाठ्य विषय :-

1. कवि और कविताएँ :
   - (अ) मैथिलीशरण गुप्त : 'यशोधरा' काव्य का 'सिद्धार्थ' सर्ग, 'द्वापर' काव्य के 'उद्धव' सर्ग का 'गोपियों के प्रति' अंश
   - (आ) जयशंकर प्रसाद : खोलो द्वार, किरण, तुम, आँसू (छंद 1 से 10 तक), आशा सर्ग (कामायनी) के प्रथम 18 छन्द
   - (इ) निराला : भगवान् बुद्ध के प्रति, जागो फिर एक बार, सन्ध्या-सुन्दरी, मातृ-वन्दना, भिक्षुक
   - (ई) अज्ञेय : जनवरी छब्बीस, कलगी बाजरे की, सम्राज्ञी का नैवेद्यदान, अच्छा खंडित सत्य, योगफल
   - (उ) दिनकर : आलोक धन्वा, परम्परा, पाप, राजर्षि अभिनन्दन, विपथगा
2. खंड काव्य : कालजयी - भवानी प्रसाद मिश्र

अंक विभाजन	
व्याख्या एवं प्रश्न	30 अंक
लघूत्तरी प्रश्न (200 शब्द)	10 अंक
अतिलघूत्तरी प्रश्न (20 शब्द)	10 अंक

सहायक सन्दर्भ-ग्रंथ

1. अपरा / निराला
   (भारती भंडार, इलाहाबाद)
2. रश्मिलोक / दिनकर
   (हिन्दी बुक सेण्टर, नई दिल्ली)
3. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि अज्ञेय / विद्यानिवास मिश्र
   (राजपाल एंड संस, दिल्ली)
4. सर्जना के क्षण / अज्ञेय
   (भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ)
5. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि / द्वारिका प्रसाद सक्सेना
   (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा)

प्रश्न पत्र-2

बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी नाटक एवं निबंध

पूर्णांक-50

1. नाटक – चन्द्रगुप्त मौर्य – जयशंकर प्रसाद

2. निबंध एवं निबंधकार

   मन की दृढ़ता (बालकृष्ण भट्ट), श्रद्धा-भक्ति (रामचन्द्र शुक्ल), आचरण की सभ्यता (सरदार पूर्ण सिंह), नाखून क्यों बढ़ते हैं? (हजारी प्रसाद द्विवेदी), जीने की कला (महादेवी वर्मा), मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र) तथा शरद बाँसुरी और विपन्न मराल (कुबेर नाथ राय)

3. एकांकीकार एवं एकांकी:

   (अ) राम कुमार वर्मा (प्रतिशोध)
   (आ) लक्ष्मी नारायण मिश्र (एक दिन)
   (इ) उदय शंकर भट्ट (कुमार संभव)
   (ई) विष्णु प्रभाकर (सीमा रेखा)
   (उ) मोहन राकेश (प्यालियाँ टूटती हैं)

द्रुत पाठ के लिए निम्न गद्यकारों का अध्ययन अपेक्षित है- राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, नगेन्द्र

टिप्पणी : व्याख्या एवं प्रश्न नाटक और निबंध से करने होंगे।

एकांकी संकलन से केवल प्रश्न पूछे जाएँगे।

द्रुत पाठ के अतंर्गत निर्धारित लेखकों के बारे में केवल अति लघूत्तरी प्रश्न ही पूछे जाएँगे।

अंक विभाजन	
व्याख्या एवं प्रश्न	30 अंक
लघूत्तरी प्रश्न (200 शब्द)	10 अंक
अतिलघूत्तरी प्रश्न (20 शब्द)	10 अंक

सहायक सन्दर्भ-ग्रंथ

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी, रचनावली / भारत यायावर (संपा०) (किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. चिन्तामणि (पहला भाग) / रामचन्द्र शुक्ल
3. अशोक के फूल / ह० प्र० द्विवेदी (सस्ता सहित्य मंडल, नई दिल्ली)
4. ह० प्र० द्विवेदी ग्रन्थावली / मुकुन्द द्विवेदी (संपा०) (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. विषाद योग / कुबेरनाथ राय (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
6. अभिनव एकांकी / राजकुमारी प्रसाद (संपा०) (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
7. हिन्दी के वैयक्तिक निबन्ध / बल्लभ शुक्ल
8. एकांकी और एकांकीकर / रामचरण महेन्द्र

9. साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार / हरिमोहन
10. हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास / दशरथ ओझा
11. ध्रुवस्वामिनी : वस्तु और शिल्प / सुरेश नारायण
12. प्रसाद के नाटक : सर्जनारत्मक धरातल और भाषिक चेतना / गोविन्द चातक
13. प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना / गोविन्द चातक
14. प्रसाद की नाट्यकला / सुजाता बिष्ट

बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रश्न पत्र-1 — पूर्णांक-50

मध्यकालीन हिन्दी काव्य

पाठ्य विषय :-

पाँच कवियों एवं उनकी निर्धारित कविताओं का अध्ययन अपेक्षित है-
कबीर, सूर, तुलसी, बिहारी, घनानन्द
(कविताओं की सूची आगे दी गई है)
द्रुतपाठ हेतु तीन कवियों का चयन किया गया है- जायसी, केशव, भूषण
इन तीन के विषय में केवल अति लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे।

कबीरदास : साखी

गुरुदेव कौ अंग : सतगुरु की महिमा अनंत, गूंगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि, ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, जाका गुरु भी अंधला, नां गुर मिल्या न सिष भया, भली भई जु गुर मिल्या, माया दीपक नर पतंग, गुर गोविन्द तौ एक है, सतगुर हम सूं रीझ कर, कबीर सतगुर नां मिल्या

सुमिरण कौ अंग : कबीर कहता जात हूं, भगति भजन हरि नांव है, चिंता तौ हरि नाव की, कबीर सूता क्या करै काहे न देखै जागि, पहली बुरा कमाई करि, लूटि सकै तौ लूटियौ।

बिरह कौ अंग : चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिनन की जोवती, आई न सकौं तुझ पैं, यहु तन जालौं मसि करूं, इस तन का दीवा करौं, हंसि हंसि कंत न पाइए, हांसौ खेलौं हरि मिलै, नैनां अंतर आव तूं, कबीर देखत दिन गया, कै बिरहनि कूं मींच दे, परबति परबति मैं फिर्‌या, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बसै, चोट संताणी बिरह की, अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि, बिरह भुवंगम पैसि करि।

परचा कौ अंग : पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंवल प्रकासिया, घट माहै औघट, हद छाडि बेहद गया, प्यंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी ही तैं हिम भया, तत पाया तन बीसर्‌या, जब मैं था तब हरि नहीं, जा कारण मैं ढूंढता, मानसरोवर सुभर जल, कबीर कंवल प्रकासिया

रस कौ अंग : कबीर हरिरस यौं पिया, हरिरस पीया जांणिये, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की, सबै रसाइण मैं किया।

सूरदास

विनय : आजु हौं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आवै, रे मन मूरख जनम गंवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जा दिन मन पंछी उडि जैहैं, धोखैं ही धोखैं डहकायो, अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ, जा पर दीनानाथ ढरै, प्रभु कौ देखौ एक सुभाई, रे सठ बिन गोविन्द सुख नांहीं।

वात्सल्य : सोभित कर नवनीत लिये, खेलत में को काको गुसैया, सांवरेहि बरजति क्यों जु नहीं।

शृंगार : बूझत स्याम कौन तू गोरी, निसिदिन बरसत नैन हमारे, अंखियां हरि दरसन की भूखी, मधुवन तुम कत रहत हरे, बिलगि जनि मानहु ऊधौ प्यारे, निरगुन कौन देस को बासी, ऊधौ अंखियां अति अनुरागी, ऊधौ अब यह समुझ भई, मधुकर जो तुम हितू हमारे, आयो घोष बडो व्यापारी, काहै को रोकत मारग सूधो, मोहन मांग्यो अपनो रूप, ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नांही।

तुलसीदास

विनयपत्रिका : ऐसी मूढता या मन की, ऐसो को उदार जग मांही, कबहुक हौं यहि रहनि रहौंगो, केसव कहि न जाइ का कहिये, मन पछितैये अवसर बीते, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौं नसानी अब न नसइहौं, माधव मोह-फाँस क्यों टूटै, जाके प्रिय न राम वैदेही

कवितावली : अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुंद कली, कीर के कागर ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर तें निकसी रघुबीर बधू, बनिता बनी स्यामल गौर के बीच, सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी बिसाल बिकराल

दोहावली : एक भरोसो एक बल, जो घन बरसै समय सिर, चढत न चातक चित कबहुं, बध्यों बधिक पर्‌यो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद

बिहारी

मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुंह तरहरि, थोरे ही गुन रीझते, या अनुरागी चित्त की, मैं समझ्यों निरधार, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, चिरजीवौं जोरी जुरै, अजौ तर्‌यौना ही रह्‌यौ, स्वारथ सुकृतु न श्रम वृथा, पर की अरु नल नीर की, बढत बढत सम्पति सलिल; दुसह दुराज प्रजान कौं बसै बुराई जासु तन

छकि रसाल सौरभ सने, बैठि रही अति सघन बन, तिय तिरसौंहे मन किये, घन घेरो छुटिगो हरषि, ज्यों ज्यों बढत विभावरी, जुवति जोन्ह में मिलि, जोग जुगति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख, खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये,

सामान्य हिन्दी

सामान्य हिन्दी की परीक्षा 100 अंकों की होगी - 50 अंकों का एक प्रश्न-पत्र स्नातक प्रथम वर्ष में और 50 अंकों का दूसरा प्रश्न-पत्र स्नातक द्वितीय वर्ष में। इसे उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा। श्रेणी निर्धारण में ये अंक नहीं जोड़े जायेंगे।

स्नातक प्रथम वर्ष — परीक्षा का पाठ्यक्रम यह है- हिन्दी अपठित, संक्षेपण, पल्लवन, पत्राचार, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, शब्द-शुद्धि, वाक्य-शुद्धि, शब्द ज्ञान-पर्याय, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, देवनागरी लिपि एवं वर्तनी का मानक रूप, कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग : प्रारंभिक परिचय, संक्षिप्तीकरण, हिन्दी में पदनाम।

स्नातक द्वितीय वर्ष परीक्षा के पाठ्यविषय हैं-

खंड क : पाँच निबन्धों का एक संकलन। निबन्धकार और निबन्ध हैं-

1. महात्मा गांधी : स्वराज्य का अर्थ ('मेरे सपनों का भारत' पुस्तक से)
2. सम्पूर्णानन्द : शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ('समिधा' पुस्तक से)
3. भगवतशरण उपाध्याय : संस्कृति का स्वरूप ('सांस्कृतिक भारत' पुस्तक से)
4. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : मसूरी की मालरोड पर एक शाम ('क्षण बोले कण मुसकाये' पुस्तक से)
5. अभयदेव : भयंकर अग्निकांड ('तरंगित हृदय' पुस्तक से)

खंड ख : हिन्दी भाषा और उसके विविध रूप

- कार्यालयी भाषा
- मीडिया की भाषा
- वित्त एवं वाणिज्य की भाषा
- मशीनी भाषा

खंड ग : अनुवाद व्यवहार

- अंगरेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

टिप्पणी : सामान्य हिन्दी का पाठ्यक्रम मानविकी, समाज विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य आदि सभी संकायों के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होगा।